धमाल मचाएंगी रश्मिका मंदाना

साउथ की मशहूर एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना अक्सर किसी ना किसी वजह से सुर्खियों में छाई रहती हैं. इसी बीच उन्होंने दिवाली के पावन अवसर पर अपने फैंस के लिए एक खास तोहफा पेश किया है. सोमवार को उन्होंने अपनी आगामी फिल्म 'मैसा' का नया पोस्टर साझा किया, जिसने सोशल मीडिया पर तहलका मचा दिया.

दरअसल, रश्मिका ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर पोस्टर शेयर किया, जिसमें वह हाथ में बंदूक लिए सशक्त और दमदार अंदाज में नजर आ रही हैं. इस पोस्टर ने फैंस के बीच उत्साह और जिज्ञासा बढ़ा दी है. पोस्टर के साथ उन्होंने लिखा, दिवाली के मौके पर छोटी-सी झलकज हम जल्द ही 'मैसा' की एक खास झलक आपके साथ साझा करेंगे. और जानकारी जल्द मिलेगी.पोस्टर की झलक देखकर फैंस अंदाजा लगा रहे हैं कि 'मैसा' एक महिला योद्धा की साहसिक और प्रेरक कहानी होगी. फिल्म का निर्माण 'अनफॉर्मूला फिल्म्स' के बैनर तले किया जा रहा है और यह एक सशक्त महिला किरदार के इर्द-गिर्द घूमती नजर आएगी.इस बीच रश्मिका मंदाना का वर्कफ्रंट भी बेहद व्यस्त है. उनकी बहुप्रतीक्षित हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'थामा' 21 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है. इस फिल्म में रश्मिका के साथ आयुष्मान खुराना मुख्य भूमिका में हैं. इसके अलावा, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, परेश रावल, राम बजाज गोयल और सत्यराज एल्विस करीम प्रभाकर जैसे कलाकार भी महत्वपूर्ण किरदार निभा रहे हैं.

दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे के प्रदर्शन के 30 साल पूरे हुए

बॉलीवुड स्टार शाहरूख खान और काजोल की ब्लॉकबस्टर फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (डीडीएलजे) के प्रदर्शन के आज 30 साल पूरे हो गये हैं. आदित्य चोपड़ा निर्मित और आदित्य चोपड़ा निर्देशित फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे को भारतीय सिनेमा का सबसे प्रिय रोमांटिक फिल्म माना जाता है. यह फिल्म 20 अक्टूबर 1995 को रिलीज हुयी थी.

शाहरुख खान और काजोल की यह ब्लॉकबस्टर फिल्म भारतीय सिनेमा के इतिहास में अमर हो चुकी है और पिछले 30 सालों से भारतीयों और दक्षिण एशियाई दर्शकों के दिलों पर राज कर रही है. फिल्म की जोड़ी राज और सिमरन आज भी प्यार की परिभाषा बन चुकी है. फिल्म की 30वीं वर्षगांठ पर शाहरुख और काजोल ने बताया कि वे कभी नहीं भूल सकते कि कैसे लोग डीडीएलजे देखकर प्यार में पड़ने लगे.

शाहरुख खान ने कहा,ऐसा लगता ही नहीं कि दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे को रिलीज हुए 30 साल हो गए हैं. ऐसा लगता है जैसे कल ही हुआ थाज क्योंकि 'बड़े बड़े देशों में ऐसी छोटी छोटी बातें होती रहती हैं'! लेकिन यह अब भी यकीन करना मुश्किल है. मैं दिल से आभारी हूं दुनिया भर के उन लोगों का जिन्होंने 'राज' को

इतना प्यार दिया. किसी ने सोचा भी नहीं था कि यह फिल्म लोगों के दिलों में इतनी गहराई तक उतर जाएगी. वो पल मैं कभी नहीं भूल सकता जब लोग फिल्म देखने आने लगेज और प्यार में पड़ने लगे.

शाहरूख ने कहा,इस फिल्म का असर जो लोगों के दिलों पर पड़ा है, वो बेमिसाल है. आज भी बहुत से कपल्स मुझसे मिलकर कहते हैं कि उन्होंने शादी की या प्यार किया डीडीएलजे देखकर. यह फिल्म भारत और दक्षिण एशियाई संस्कृति के पॉप कल्चर में एक खुशहाल छाप छोड़ गई.

शाहरुख ने कहा, ,इस फिल्म की सफलता का सारा श्रेय आदित्य को जाता है, जिनके पास डीडीएलजे की अद्भुत स्पष्टता थी, और यश जी के आशीर्वाद को भी. हम सबने यह फिल्म बहुत प्यार और ईमानदारी से बनाई थी. आने वाले सालों तक यूं ही प्यार में पड़ते रहें. काजोल, जो इस फिल्म में 'सिमरन' के किरदार में थीं, ने कहा, डीडीएलजे के 30 साल पूरे होना किसी सपने जैसा लगता है! यह फिल्म अब एक विरासत बन चुकी है, जो एक पूरी पीढ़ी के लिए नॉस्टैल्जिया का हिस्सा है. यह फिल्म उस बेफिक्र युवावस्था और पहले प्यार की सच्चाई से बनी थी. हमने कभी नहीं सोचा था कि राज और सिमरन का ट्रेन स्टेशन वाला सीन पूरे देश को रोक देगा. इसके गाने, डायलॉग्स और सरसों के खेत पॉप कल्चर का हिस्सा बन गए.

काजोल ने कहा, डीडीएलजे का एक अंश हर उस रोमांटिक फिल्म में मौजूद है जो उसके बाद बनी. मेरे लिए 'सिमरन' अब भी ज़िंदा है ,वो लाखों भारतीय लड़कियों का प्रतीक है जो अपने माता-पिता की बात मानती हैं, पर दिल में आज़ादी की चाह भी रखती हैं. इसलिए वो आज भी सबको छूती है.

हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं

बॉलीवुड में असरानी को एक ऐसे अभिनेता के तौर पर याद किया जायेगा, जिन्होंने अपने जबरदस्त कॉमिक अभिनय से दर्शकों के दिलो में पांच दशक तक अपना दीवाना बनाया.

एक जनवरी 1941 को जयपुर में जन्में गोवर्धन असरानी बचपन के दिनों से हीं अभिनेता बनने का ख्वाब देखा करते थे.असरानी के पिता 1936 में कराची से जयपुर आ गए थे. असरानी के बड़े भाई नंद कुमार असरानी जयपुर की न्यू कॉलोनी में पिछले लक्ष्मी साड़ी स्टोर्स नाम से दुकान चलाते थे.असरानी की पढ़ाई जयपुर के सेंट जेवियर स्कूल और राजस्थान कॉलेज में हुई. जयपुर में वह मित्रों के बीच चोंच नाम से मशहूर थे.

असरानी बचपन से ही जयपुर में रेडियो से जुड़ गए थे. बाद में उन्होंने रेडियो में नाटक भी किए. जब उन्होंने मुंबई जाने का फैसला किया तो जयपुर में रंगकर्मी दोस्तों ने उनकी मदद के लिए दो नाटक किए- जूलियस सीजर और पीएल देशपांडे का अब के मोय उबारो. - इसमें मदन शर्मा, गंगा प्रसाद माथुर, नंदलाल शर्मा आदि लोगों ने हिस्सा लिया और नाटकों के टिकट से जो थोड़ी-बहुत आय प्राप्त हुई, वह असरानी को मुंबई जाने के लिए दे दी गई.असरानी वर्ष 1962 में मुंबई पहुंचे. असरानी की मुलाकात 1963 में किशोर साहू और ऋषिकेश मुखर्जी से हुई. उन्होंने असरानी को फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीयूट ऑफ इंडिया पुणा से अभिनय का कोर्स करने की सलाह दी.

वर्ष 1966 में फिल्म इंस्टीयूट से अभिनय की पढ़ाई पूरी करने के बाद असरानी को शुरुआती संघर्ष का सामना करना पड़ा, जिसके बाद उन्होंने एफटीआईआई में प्रशिक्षक की नौकरी कर ली. काम की तलाश में, वह हर शुक्रवार को मुंबई जाते थे. एक बार ऋषिकेश मुखर्जी, गुलजार के साथ इंस्टीयूट में पहुंचे. उन्हें देखकर असरानी ने उनसे कहा-दादा, आपने मुझे काम देने के लिए कहा था. इस पर मुखर्जी बोले-देगा, काम देगा.

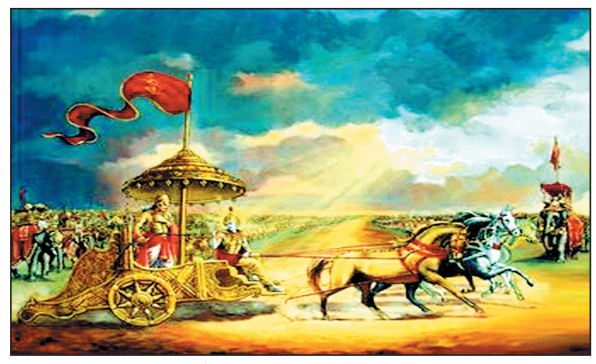

आ रहा है भारत का पहला एआई पॉवर्ड एपिक सीरीज

महाभारत : एक धर्मयुद्ध

स्टार प्लस, जियोस्टार और कलेक्टिव मीडिया नेटवर्क के सहयोग से भारत का पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पावर्ड प्रीमियम एंटरटेनमेंट सीरीज़ महाभारत- एक धर्मयुद्ध लॉन्च कर रहा है.

यह भव्य पौराणिक गाथा 26 अक्टूबर से शाम 7-30 बजे स्टार प्लस पर प्रसारित होगी. इससे एक दिन पहले, 25 अक्टूबर को, इसका डिजिटल प्रीमियर जियो हॉटस्टार पर होगा. इस सीरीज के साथ, स्टार प्लस अपनी उस विरासत को आगे बढ़ा रहा है, जो पीढ़ियों से भारतीय दर्शकों के लिए बड़े और अनोखे मनोरंजन पेश करती रही है. महाभारत- एक धर्मयुद्ध भारतीय महाकाव्य को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की ताकत के साथ नए अंदाज में पेश करता है, जिसमें पौराणिक कहानी, टेक्नोलॉजी और इंसानी इमोशन है, जो भारतीय टेलीविजन पर पहले कभी नहीं देखा गया है.

100 एपिसोड की ये सीरीज पांडवों और कौरवों के बीच हुए उस अमर युद्ध को एक नए रूप में दिखाएगी. इसे इतनी खूबसूरती से बनाया गया है कि दर्शक भावनाओं और भव्यता दोनों में डूब जाएंगे. एआई-आधारित स्टोरीटेलिंग के ज़रिए ये शो भारत की सांस्कृतिक विरासत और भविष्य की तकनीक के बीच एक अनोखा पुल बन रहा है. ट्रेलर लॉन्च के मौके पर कलेक्टिव आर्टिस्ट नेटवर्क के फाउंडर और ग्रुप सीईओ विजय सुब्रमण्यम ने कहा, हममें से कई लोगों के लिए महाभारत सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि वो किस्से हैं जो हमने अपने माता-पिता और दादा-दादी से सुने हैं. ट्रेलर तो बस आने वाले अनुभव की एक झलक है, जो भावनाओं से भरा, भव्य और पूरी तरह डूब जाने वाला होने वाला है. जियो स्टार के सीईओ , केविन वाज़ ने कहा, महाभारत- एक धर्मयुद्ध हमारे विश्वास का जश्न है, एक ऐसा संगम जिसमें अमर महाकाव्य और मशीन इंटेलिजेंस मिलकर नए भारत की आत्मा को पेश करते हैं.

कंवर ढिल्लो का वर्क कल्चर पर बड़ा बयान

टीवी एक्टर कंवर ढिल्लों ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर अपनी राय रखी है. उन्होंने कहा कि टीवी इंडस्ट्री में काम के घंटों को सीमित करने की सख्त जरूरत है. कंवर का मानना है कि कलाकारों और तकनीकी टीम के लिए 12 घंटे से ज्यादा की शिफ्ट शारीरिक और मानसिक रूप से थकाने वाली होती है, और आदर्श रूप से 8 से 10 घंटे की शिफ्ट पर्याप्त होनी चाहिए.

कंवर ढिल्लों ने कहा कि मैंने किसी आधिकारिक बदलाव के बारे में नहीं सुना है, लेकिन मैं 12 या उससे अधिक घंटों के बजाय 8-10 घंटे की स्टैंडर्ड शिफ्ट में काम करना पसंद करूंगा. कभी-कभी एपिसोड रातभर में शूट करके देने होते हैं, तब 'ना' कहना मुश्किल हो जाता है. लेकिन आदर्श रूप से 9-10 घंटे की शिफ्ट होनी चाहिए.

एटली ने विज्ञापन की दुनिया में किया डेब्यू, अपने जादू से रचा नया इतिहास

'जवान', 'मर्सल' और 'थेरी' जैसी मेगा हिट फिल्मों के लिए जाने जाने वाले एटली ने अब विज्ञापन की दुनिया में कदम रख दिया है, और यहां भी उन्होंने वही ग्रैंड सिनेमाई करिश्मे का प्रदर्शन किया है और उसे लार्जर दैन लाइफ बना दिया है.

जब बात हो स्केल, इमोशन और स्टाइल को एक साथ जोड़ने की, तो एटली का नाम सबसे पहले आता है. वे जिस प्रोजेक्ट को हाथ लगाते हैं, उसे सिनेमैटिक मैजिक में बदल देते हैं और इसका सबूत है हाल ही में चिंग्स के लिए किया गया उनका नया विज्ञापन. आठ मिनट का यह चिंग्स विज्ञापन पारंपरिक 30-सेकंड वाले फॉर्मेट को न सिर्फ पूरी तरह तोड़ता है, बल्कि दर्शकों को एक मिनी ब्लॉकबस्टर का अनुभव भी देता है, जिसमें हाई-ऑक्टेन एक्शन, ड्रामा, इमोशन और विजुअल ब्रिलियंस का तड़का लगा है. यह सिर्फ एक विज्ञापन नहीं, बल्कि आठ शानदार मिनटों में पेश किया गया मास एंटरटेनमेंट का डबल डोज़ है.

एटली ने कहा,मेरे लिए हमेशा प्यार सीक्रेट इंग्रिडिएंट रहा है और चिंग्स कुछ ऐसा बनाना चाहता था, जिसे इंडिया सिर्फ देखे नहीं, बल्कि प्यार करे तो मैने बिना दो बार सोचे हां कह दिया. हालांकि इसे रणवीर की मैडनेस, बॉबी सर के मैजिक और श्रीलीला की फ्रेशनैस ने और खास बना दिया और हमने इसे बहुत दिल से पकाया. अब इसे ऑडियंस को टेस्ट करना है.

कृषि जगत

रसोई के कचरे से तैयार करें खाद

शहरी जीवन में बागवानी लोगों का एक शौक बनता जा रहा है. कम जगह होने के बावजूद हर कोई इसे करना चाहता है. इसकी वजह से किचन गार्डनिंग का चलन काफी तेजी से बढ़ा है. लेकिन गार्डनिंग जितनी नेचुरल तरीके से की जाए उतना ही अच्छा होता है. साथ ही पौधों का ग्रोथ भी अच्छे से होता है. ऐसे में इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है केमिकल खाद की जगह ऑर्गेनिक या घर पर किचन वेस्ट से तैयार किए गए

ऐसे तैयार करें किचन वेस्ट खाद- गार्डनिंग वाले पौधों के लिए बेहतर खाद के तौर पर आप किचन के वेस्ट से खाद तैयार कर सकते हैं. इसके लिए सबसे पहले आपको सब्जी और फलों के छिलकों को एक जगह पर इकट्ठा करना होगा. फिर इन छिलकों को धूप में अच्छे से सूखा लें. इसके बाद दूसरे स्टेप में सारे सूखे छिलके को एक बाल्टी में डालें और उसमें गोबर और पानी का घोल भर दें. इसके बाद इस घोल को किसी ठंडे जगह पर रख दें और कुछ दिनों तक सुखाएं.

इतने दिनों में तैयार हो जाएगी खाद- सब्जी और फलों के छिलकों को 4-5 दिनों तक गोबर के घोल के साथ सुखाने के बाद खाद पूरी तरह से इस्तेमाल करने के लिए तैयार हो जाता है. फिर इसे आप थोड़ा-थोड़ा करके अपने किचन गार्डन में हर हफ्ते डाल सकते हैं, वहीं, इसका रिजल्ट आपको महीने भर में देखने को मिल जाएगा. इस खाद के इस्तेमाल से आपका पौधा हरा-भरा हो जाएगा. साथ ही उत्पादन भी बेहतर होगा.

आड़ू के पेड़ों बचाना है बेहद जरूरी

ताजे पीच यानी आड़ूहर किसी का सपना है और सर्दियों में इसका खास ध्यान रखना होगा. हालांकि, ठंड का मौसम फलों के पेड़ों के लिए चुनौतीपूर्ण होता है और मौसम में बदलाव कई बार हानिकारक कीड़ों को भी आकर्षित करता है. अच्छी बात यह है कि इन मौसमी परेशानियों से अपने पेड़ की सुरक्षा के कई तरीके हैं. सर्दियों में अपने पीच के पेड़ की खास देखभाल करें ताकि जब गर्मी का मौसम आए तो आपका पेड़ एक बार फिर बेहतरीन स्थिति में होगा और जमकर फल दे सकेगा.

ये हैं 3 खास उपाय- भारत में पीच (आड़ू) की खेती मुख्य रूप से ठंडे और पहाड़ी इलाकों में की जाती है. भारत में पीच की खेती के प्रमुख क्षेत्रों में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू और कश्मीर और सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश हैं यानी वो सभी जगहें जहां पर काफी सर्दी पड़ती है और बर्फबारी होती है. ऐसे में आड़ू के पेड़ के हर हिस्से को इस मौसम में खास देखभाल की जरूरत होती है. **ऊपरी हिस्सा कवर करें**- पेड़ का मुकुट यानी इसके ऊपरी हिस्से को भी कवर

करने की जरूरत हो सकती है. शाखाओं को धीरे-धीरे रस्सी से एक साथ बांधें और उन्हें कई परतों वाले नॉन-वोवन कपड़े या विशेष रूप से बने कवर से लपेट दें. नए (युवा) पेड़ों को एक्स्ट्रा प्रोटेक्शन की जरूरत होती है.

मल्च लगाएं- सर्दियों से पहले अपने पीच के पेड़ के तने के आसपास की मिट्टी को ढीला करें और उसकी जड़ों की सुरक्षा के लिए मल्च लगाएं. भारत में आड़ू की खेती मुख?यतौर पर पहाड़ों पर होती है और जहां पर बर्फ गिरती है. ऐसे में अगर आपके यहां सर्दियों में बारिश या बर्फ पिघलने की स्थिति आम है तो एक मजबूत छत वाले शेल्टर का निर्माण करें. अगर बर्फ लगातार रहती है, तो वही खुद एक प्राकृतिक इंसुलेशन का काम करती है. आप पीट, सूखे पत्ते, लकड़ी के टुकड़े, टहनियों के टुकड़े, पुआल या ऐसी अन्य सामग्री का इस्तेमाल कर सकते हैं.

गहराई से पानी दें- ठंड पड़ने से पहले यह सुनिश्चित करें कि आपके पीच के पेड़ में पर्याप्त नमी हो. इससे वसंत ऋतु में पेड़ को अच्छी शुरुआत मिलेगी. पानी की मात्रा पेड़ की उम्र, मिट्टी की बनावट और उसकी स्थिति पर निर्भर करती है. मिट्टी में धीरे-धीरे पानी दें ताकि वह सतह पर जमा न हो. गहरी सिंचाई करते समय सावधान रहें क्योंकि ज्यादा नमी जड़ों को नुकसान पहुंचा सकती है.

तेल की मात्रा बढ़ाने के लिए सही समय पर कटाई जरूरी

मूंगफली की फसल में सही समय पर सिंचाई और कटाई, उपज और तेल की मात्रा बढ़ाने के लिए बहुत ही जरूरी है. फसल के दौरान पौधों की वृद्धि और फलियों के विकास पर ध्यान देना किसानों की सफलता की कुंजी है.

फलियों का विकास और सिंचाई - मूंगफली की फसल में फलियां बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है. अगर नमी कम हो, तो फलियों की वृद्धि प्रभावित हो सकती है. ऐसे में पौधों की वृद्धि की अवस्था के अनुसार समय-समय पर सिंचाई करना लाभदायक होता है.

फूल और फलियों का समय

मूंगफली के पौधों में फूल एक साथ नहीं आते. गुच्छेदार प्रजातियों में फूल करीब दो महीनों तक और फैलने वाली प्रजातियों में लगभग तीन महीनों तक आते रहते हैं. फलियों के पूर्ण विकास के लिए दोनों प्रकार की प्रजातियों में कम से कम दो माह का समय आवश्यक होता है.

कटाई का सही समय- फसल की खुदाई तभी करनी चाहिए जब अधिकतर फलियां पक जाएं. देर से कटाई करने पर उन प्रजातियों में जिनमें सुषुप्तावस्था नहीं होती, पौधे खेत में नमी मिलने पर पुनः अंकुरित हो सकते हैं. ऐसे मामलों में पौधों की पत्तियां गिर जाती हैं और पौधा सूख जाता है. किसानों को ध्यान देना चाहिए कि पौधे पीले पड़ जाएं, तभी फसल की कटाई करना सही होता है.

फसल की पैदावार पर निगरानी- फसल पकने के कुछ दिनों के अंतराल पर खेत से कुछ पौधे उखाड़कर, समय-समय पर फसल के पकने का निरीक्षण करना चाहिए. जब प्रति पौधे से अधिकतम संख्या में पूर्ण विकसित और परिपक्व फलियां प्राप्त हो जाएँ, तभी फसल की कटाई करनी चाहिए.

फलियों को सुखाना

कटाई के बाद, फलियों को अच्छी तरह सुखाना आवश्यक है. सुखाने की प्रक्रिया तब तक जारी रखनी चाहिए जब तक फलियों में 9-10 प्रतिशत तक नमी न रह जाए. इससे फलियों की गुणवत्ता और तेल की मात्रा बनी रहती है.

कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली 4 सब्जियां

सब्जियां नकदी फसलों में गिनी जाती हैं, कहने का मतलब है कि इनसे अच्छी कमाई की जा सकती है. अगर किसान हैं और नवंबर के महीने में सब्जियां उगाना चाहते हैं तो आपको ऐसी सब्जियों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें उगाकर आप अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं. इन सब्जियों को उगाने के लिए नवंबर का महीना अच्छा बताया जाता है, आइए उनके नाम जान लेते हैं.

गाजर- गाजर के बारे में आप अच्छी तरह से जानते होंगे. ये सर्दी के दिनों में काफी मांगी जाने वाली सब्जी है. गाजर का इस्तेमाल मिक्स वेज, सलाद, जूस और हलवा के रूप में खूब किया जाता है. इसके कई हेल्थ बेनिफिट्स होने के कारण डिमांड जबरदस्त होती है. इसकी खेती बीजों से की जाती है.

चुकंदर- चुकंदर सर्दी के दिनों में बहुत खास है. इसका इस्तेमाल सलाद या जूस के रूप में किया जाता है. चुकंदर जड़ प्रजाति वाली सब्जियों में गिनी जाती है. इसके बहुत से हेल्थ बेनिफिट्स होते हैं इसलिए इसकी भी डिमांड खूब होती है. इसको भी बीजों से लगाया जाता है.

ब्रोकली- ब्रोकली गोभी प्रजाति की एक खास सब्जी है, इसकी खेती के लिए भी रबी सीजन अच्छा होता है. इसका तरीका बिल्कुल गोभी की अन्य प्रजातियों की तरह ही की जाती है. ब्रोकली को एक विदेशी सब्जी माना जाता है और इसके ढेर सारे फायदे होते हैं. इसको लगाने के लिए नर्सरी में पौध मिल जाते हैं.

मूली- मूली भी सलाद और कई फूड आयटम्स में उपयोग होती है. इसके कई पोषक गुण हमारे हेल्थ का ध्यान रखते हैं. अगर आप मूली की खेती करना चाहते हैं तो इसके लाल बीजों का इस्तेमाल कर सकते हैं. ये एक जड़ प्रजाति वाली सब्जी है जो तीन महीने बाद किसानों को फायदा पहुंचाती है.

सब्जियों की खेती से फायदा

कमाई के लिहाज से सब्जियों की खेती करना फायदेमंद होता है. इसकी खास बात ये है कि ये जल्दी तैयार हो जाती हैं और साल में 2-3 बार उगाया जा सकता है. अगर आपके पास कम खेत है तो भी कतारबद्ध तरीके से सब्जियां उगाते हुए आप अच्छी कमाई कर सकते हैं. आपको बता दें कि सब्जियों को मिश्रित रूप से भी उगाया जा सकता है, कहने का मतलब है कि कम खेत में भी ढेर सारी सब्जियां उगाकर कमाई की जा सकती है. सब्जियों की खेती करने वाले किसानों को पानी की व्यवस्था जरूर करनी चाहिए क्योंकि कम पानी में सब्जियों की खेती सूख जाती है या इसके फल पूरी तरह से नहीं बढ़ पाते हैं. कोशिश करें कि सब्जियों की खेती ऑर्गेनिक तरीके से ही करें ताकि इनकी अच्छी कीमत मिल सके.